मेरी इंतजार की घड़ियाँ

मैं रमा मेरी शादी को आज दस साल होगाये। मुझे अभी भी मेरी शादी के दिन बहुत अच्छे से याद है। मैं सज-सवर कर अपने दुल्हे राहुल के बारात लानेका इंतजार कर रही थी। भले वह देर से आते मेरी जिंदगी में मैने सोचाना की शायद शादी के दिन वह समय पर आयेगा। पर वह देर से ही आये। इसे मैं अपनी बुरी किस्मत कहूँ या उनकी बुरी आदत ?.

शादी के कुछ महीने बहुत अच्छे से गुजर गये। अपने परिवार के साथ हम दोनो भी बहुत खुश थे। हमने एक साथ बहुत सी जगह की खूबसूरती का अनुभव लिया। भले हर काम को वह समय लगाकर करने पर मुझे उन्होने वह सारी खुशियाँ दी जो एक शादीशुदा औरत को चाहिये। पर कुछ ही सालो में मेरी यह कुछ दिनो की खुशियाँ गम में तब्दील होगई। इसे मैं मेरी बुरी किस्मत कहूँ या किसी की बुरी नजर ?

पता नहीं की यह मेरे साथ क्या हो रहा था। अचानक राहुल का बदल जाना मुझसे लडाई करना हर बात पर चीकना-चिलाना मुझे कुछ समझ नहीं आ रहा था। वह रोज़ सुबह-शाम मुझसे लडने लगा।

(Note: Graded Items may be published in Schoolwki. So write neatly. Don't fold paper. Don't write overleaf)

हर बात पर मुझे टोकने लगा। मैं यह सब सहन कर कुछ नहीं बोलती पर एक दिन कुछ ऐसा हुवा जिसकी कलपना करने की एक हिमत मुझमे नहीं थी। वह एक दिन रात के तीन बजे घर आया। मैं उसके इंतज़ार मैं बैठी हुई थी। मुझे नींद के झोंके आरहे थे पर मैं सोई नहीं। पर स्कूल घर आते ही सोगया। इस बात से मैं दुखी थी। मैंने उससे पूछा की वह ऐसे क्यों किया? वह मेरी कोई बात नहीं सुना। फिर कुछ दिनो बाद फिर से वह बहुत देर से घर आया। मैंने कुछ ना बोला। पर स्कूल का इतनी देर से आना, मेरा उसका इंतज़ार करना, उसका मेरे पर ध्यान ना होना, मुझे यह सब बिलकुल अच्छा नहीं लग रहा था। भले वह पहले से ही देर से आने वाले इन्सान है, उसका मुझे इंतज़ार करवाना कोई नई बात नहीं है। पर इतना इंतज़ार करवाना क्या यह सही है?

हर दिन मैं इंतज़ार करते करते थकने लगी ~~गई~~ दो साल होगाते पर इंतज़ार करना ~~कम~~ खतम नहीं हो रहा था बलकी वह दिन बे दिन बढ़ता चला जा रहा था। फिर एक दिन ऐसा आया जिस दिन उसने

मुझे छोड़ कर रख दिया। मेरी सारी ज़िंदगी बरबाद होगई। जिसके साथ ज़िंदगी गुज़ारने की मैं ख्वाब देख रही थी उसी ने मेरी ज़िंदगी को तबाह कर दिया। "रमा.... रमाााा......, तुम कहाँ हो इस घर में हो भी कि नहीं?" राहुल चिल्लाकर बोलने लगा। "हाँ मैं इधर ही हूँ" मैं खुशी से बोली। हाँ मन में कई सवाल थे पर बहुत दिनो के बाद मैंने राहुल के मुह से मेरा नाम सुना था। मैं दौड़ कर राहुल के पास चली गई और पूछा "क्या हुआ? तुम चिल्ला क्यों रहे हो?" मुझे तुमसे बात करनी है रमा" "हाँ बोलो क्या बात है?" मैं बहुत डरी हुई थी मुझे बिलकुल पता नहीं था कि वह क्या बोलेगा। "रमा सुनो मैं तुम्हे दुखी करना नहीं चहता हूँ। पर मुझसे गलतीयाँ हो जाती है"। "कोई बात नहीं राहुल पती-पत्नी के बीच यह सब होता रहता है" "नहीं रमा मैं तुम्हारे लायक नहीं तुम्हे मुझसे बेहतर कोई मिलजाएगा"। "नहीं राहुल तुम यह क्या कह रहे हो"? मेरी हलत बहुत खराब हो रही थी। मैं रोने लगी। "रमा सुनो मैं जरहा हूँ"। यह बोलकर राहुल चला गया

61st Kerala State School Kalolsavam - Jan 03 To 07, 2023
Kozhikode

Item Code: 952 Participant Code: 101

और मैं बेहोश होगई।
मैंने अपने आँखें खोल कर जब देखी तो खुद को अस्पताल में पाई। मेरे सामने मेरी माँ खड़ी थी। "माँ राहुल... राहुल कहाँ है?" मैंने उत्साह से पूछा। "बेटा तुम आराम करो डॉक्टर ने तुम्हें आराम करने कहा है। तुम्हें आराम की ज़रूरत है"। "नहीं माँ मुझे राहुल से बात करने की ज़रूरत है"। "क्यों बेटा तुम दोनों के बीच कोई बात चल रही है? क्या तुम दोनों खुश नहीं हो?" "माँ आप ऐसा क्यों पूछ रही हो?" शायद माँ को शक हो गया था। "कुछ नहीं डॉक्टर ने तुम्हें नींद और आराम की कमी बताई है। और यह भी कहाँ की तुम कोई बात को लेकर चिन्तित हो"। "कुछ नहीं माँ ऐसा कुछ नहीं है"। "तुम मेरी ही बेटी हो मैं तुम्हें पहचानती हूँ। जानती हूँ क्या बात है? बताओ।" मुझे समझ आगया कि अब माँ को सब बता देना चाहिए। "माँ..." मैं रो पड़ी। "माँ मैं और राहुल के बीच कुछ ठीक नहीं है"। अचानक से एक आवाज़ आया और मेरे कमरे में मेरी सासुमाँ आई। उनका ऐसे आना कुछ ठीक नहीं लगा।

(Note: Graded Items may be published in Schoolwki. So write neatly. Don't fold paper. Don't write overleaf)

"रमा क्या हुआ तुमहे ? तुमहारी माँ का कॉल आया था ?" | "कुछ नहीं बस थोडी सी थकान होगई थी" | "तुम ठीक होना?" "हाँ सब ठीक है" | राहुल ने सासुमाँ को सब बता दिया था | और वह इशारों में मुझसे चुप रहने को कह रही थी | मैं चुप होगई और माँ को कुछ नहीं बताया | मुझे डकटर ने घर जाने की इजाज़त दी तो मेने फैसला किया की मैं अब अपने माँ के घर जाऊँगी | घर जाकर मैं माँ से पुछी "कब तक इंतज़ार करूँ" ? माँ चिंतित हो कर पुछी " क्या, क्या हुआ तुमहे ? किस का इंतज़ार ?" " हर चिज़ का माँ, मेरे पति का, मेरे किस्मत के ठीक होने का, मेरी ज़िंदगी खुशहाल होने का, सब चिज़ का अच्छा होने का मैं कब तक इंतज़ार करूँ माँ ?" माँ हैरान हो गयी थी | उनको मेरी बाते समझ आने में वक्त लगा | "बेटा तुम जाओ सो जाओ |" मैं इंतज़ार कर कर थक चुकी हूँ माँ | बचपन से मैं जिस राजकुमार का इंतज़ार कर रही थी वह देर से आया | और जब आया तब भी वह मुझे इंतज़ार करवाया और आज भी करवा रहा है | मैं कब तक यह सब सहन करूँ ? कब तक सब ठीक हो ने का

Item Code: 952 Participant Code: 101

इंतज़ार करूँ?" मैं उस दिन के बाद अपने घर, अपना घर नहीं, मेरे ससुराल, खुल के घर कभी वपस नहीं गई।

मैंने नहीं था की मुझे नहीं जाना है। मैं रहूल के इंतज़ार में थी की वह आएगा मुझे लेजाएगा। आज दस साल पूरे होजाते हमारी शादी को। पर आज तक वह मुझे इंतज़ार करवा रहा है। "मैं कब तक इंतज़ार करूँ" मेरी ज़िन्दगी में शायद इंतज़ार की घड़िया कभी खत्म नहीं होगी।। क्या वह मुझे लेजाने आएगा? या मैं इंतज़ार करते रहूँगी? पता नहीं की कब तक इंतज़ार करती रहूँगी।...